होने और करने के बीच का तालमेल

होना हम किसे कहेंगे? जैसे पानी का बहना, सूरज का तपना, पोधे पर फूल खिलना, यह सब चीज़ें हम कहते है हो रही है, सुबह का होना..शाम का ढलना..बारिश का आना..हवा का चलना, हम कहते है यह सब होता है, तो करना क्या है? हम कहते है मेने खाना खाया, मेने पानी पिया, बच्चे को हम पूछते है तुम स्कूल गए? तो रोज़िंदा जीवन में लोग करना शब्द इस्तेमाल करते है, इंसान सब कुछ करता है, और बाक़ी जो कुछ है वो सब होता है, अगर ऐसा नहीं है तो लोगों को कहना चाहिए, मेरा खाना हुवा, मेरा पानी पीना हुवा, बच्चे का स्कूल जाना हुवा, हमने अपने आस पास देखा है मा अपने बच्चे पर ग़ुस्से होती है तब अगर वो खाना खा रहा है तो उसे कहती है तेरा खाना हो गया? ग़ुस्से से..कोई अपनी मर्ज़ी से कुछ कर रहा है तो उन्हें लोग कहते है, तेरा ये हो गया..वो हो गया वग़ैरह, यह जो इंसान के जीवन में “होना” है वो ग़ुस्से से जुड़ा हुवा है, इंसान के जीवन में “होना” एक और भी है, कई बार लोग कुछ करने से फैल हो जाए तब कहते है, सब नसीब का खेल है, नसीब में हो…..तो “होता” है, यहा पर होना नसीब के साथ जुड़ गया, निराशा के साथ जुड़ गया

अगर आप थोड़ा रुके और देखे तो पता चलेगा की खाना तो हो रहा है!!!!! जब भूख लगे और आप खाना खाए तो आप कहेंगे की आपने खाना खाया, भूख इग्नोर हो गयी, भूख लगी इसलिए खाना हुवा ना!! कभी स्वाद के लिए खा लिया तब भी खाना “हुवा”, क्योंकि स्वाद ने खिलाया, क्योंकि स्वाद “आया” इसलिए खाना खाया ना!! अगर आप स्वाद को इग्नोर कर दे तो कह सकते है की आप ने खाया,

जहाँ पर “होना” किसी चीज़ के साथ जुड़ा है वहा बीच में “में“ शब्द आ जाएगा, तब हम होने से दूर हो जाते है, वैज्ञानिक कहते है, सुबह शाम “होती” है क्योंकि पृथ्वी सूरज के चक्कर लगाती है, यहा “होने” के साथ कारण जुड़ गया, बारिश “होती” है, क्योंकि भाप ठंडी हो तब वो पानी बन कर नीचे गिरती है, यहा कारण ने उसे “होने” से दूर कर दिया, अब उन्हें सुबह शाम “होती” है, उसके साथ कोई आचार्य नहीं है, उनके लिए सुबह और शाम का “होना” कोई बड़ी बात नहीं है, उसने कारण खोज लिया, उस कारण ने उसके ‘में’ को बड़ा किया,

पर अगर हम थोड़े सरल हो जाए, जैसे बच्चा होता है।।। बच्चे को खिलोना मिल जाए तो बहुत आनंद से भर जाता है, अगर बच्चे के पास कारण हो तो? वो कहेगा आप मेरे बाप है, इसलिए खिलोना दिया उसमें कोई बड़ी बात नहीं है,, बाप का फ़र्ज़ होता है बच्चों की ज़रूरत पूरी करना, पर बच्चे बिलकुल भोले और सरल जब तक हमारे पास से चालाकी ना सिख ले, अगर आप उसे होमवर्क करवाने के लिए चोकलेट देते है तो बच्चा बड़ा होकर दूसरे से अपना काम निकलवाने रिश्वत देना सिखेगा, और लोग केहते है रिश्वत ऑफ़र करना गुना है, वही बच्चा बड़ा होकर किसी लड़की को रुलाएगा, क्योंकि उन्हें पहले से ही सिखाया हुवा है की अपना काम निकलवाना हो तो लालच देना पड़ता है, पर अब तक जो हुवा उसे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता, अगर हम सरलता की और बढ़े तो हम भी

किसी आकाश में उड़ते पक्षी को देखके आशर्य से भर सकते है, हम भी परमात्मा की दी गयी एक एक कृपा के लिए अनुग्रहित हो सकते है, बारिश में हमें भी नाचने का मन करेगा, इंसान के बनाए खिलोने से इस अस्तित्व का सर्जन हार बहोत बड़ा है, असल में बड़ा शब्द छोटा रह जाता है, परमात्मा की बनायी हुयी हर चीज़ यूनिक है, अनमोल है, उसमें हम भी शामिल है, हमारे “होने” के “कारण” हमें जो सिखाए गए है उनको छोड़ना होगा, बच्चा जब पेदा होता है उन्हें सिखाया जाता है यह तुम्हारे पिताजी है, यह तुम्हारी माताजी है, और इसके “कारण” तुम पेदा हुवे, अगर उन्हें ऐसा बताया जाता कि पहले तुम ख़ुद हो, क्योंकि तुम परमात्मा के बनाए इस अस्तित्व के एक भाग हो, तुम अनमोल हो, तुम पेदा “हुवे” हो, तुम्हें पेदा किया नहीं गया, और हम तुम्हारे माता और पिता तुम्हारे बाद है, क्योंकि हम माता और पिता इसलिए बन पाए क्योंकि तुम्हारा हमारे घर जन्मा हुवा, ऐसा भी हो सकता था की हमारे घर कोई जन्म ही ना ले, पर ऐसा ना हुवा क्योंकि तुम हमारे घर आए, इसलिए तुम हमारे भगवान हो, तब वह बच्चा कहता मुजे खिलोने की क्या ज़रूरत, यह पूरा अस्तित्व मेरा खिलोना है, में फूल के साथ खेल लूँगा, में किसी पक्षी के साथ खेल लूँगा, में आपके साथ खेल लूँगा, में आपके घर पेदा हुवा इसका मतलब है परमात्मा आपके साथ है, पर ऐसा होता नहीं है क्योंकि हम उन्हें ख़ुद की पहचान कराने के बदले हमारी पहचान कराते है, पर बच्चा भी निर्दोष…एक दम सरल…समज जाएगा जूठे लोग है, इनसे क्या खेलना, खिलोने से ही खेल लेंगे, खिलोना कहेगा तो नहीं तुम मेरे साथ खेले हो तुम मेरे ग़ुलाम हो, मेरा ऋण है तुम पर, और हम भी उतावले हो जाते है कहते है खिलोना लाके देदो बच्चा खेलता रहेगा…परेशान ना करे… क्योंकि हमें बहोत दूसरे काम है, पर अब यही सारे काम छोड़कर सरलता की और बढ़ना है, तब धीरे धीरे कारण छूटते जाएँगे, तब हमें “होना” दिखाय देगा, हम बीच में से हट जाएँगे, “में” बीच में से हट जाएगा, तब हम कहेंगे “वही” करता है वही “होता” है, यही है होने और करने के बीच का तालमेल,

(अगर कभी जाने अनजाने में मेरी कोई बातों से आपको दुःख पहोचा हो तो में आपसे क्षमा चाहता हु)

Aasthit